Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 1

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 25

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

25 अगस्त 2016 ई

21 ज़िलकअदा 1437 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

कुरआन शरीफ में यह वादा है कि जो व्यक्ति सच्चे दिल से ख़ुदा तआला पर ईमान लाएगा, ख़ुदा उसे बर्बाद नहीं करेगा और सच्चाई उस पर खोल देगा। ख़ुदा तआला की हस्ती बहुत रहम करने वाली है अगर कोई एक कदम उसकी तरफ आता है तो वह दो कदम आता है। और जो व्यक्ति उसकी ओर जल्दी से चलता है तो वह उसकी ओर दौड़ कर आता है और नेत्रहीन की आँखें खोलता है।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

कुरआन शरीफ में यह वादा है कि जो व्यक्ति सच्चे दिल से ख़ुदा तआला पर ईमान लाएगा, ख़ुदा उसे बर्बाद नहीं करेगा और सच्चाई उस पर खोल देगा और सच्चाई उसको दिखाएगा जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है:

وَالَّذِیۡنَ جَاهَدُوۡا فِیۡنَا لَنَهۡدِیَنَّهُمۡ سُبُلَنَا

इसलिए इस आयत का यह अर्थ हुआ कि अल्लाह पर ईमान लाने वाला बर्बाद नहीं किया जाता आख़िर अल्लाह तआला पूरी हिदायत उस को कर देता है अत: सूफियों ने सैंकड़ों उदाहरण इसके लिखे हैं कि कुछ ग़ैर जाति के लोग जब पूर्णता ईमानदारी से ख़ुदा तआला पर ईमान और अच्छे कर्म में संलग्न हुए तो ख़ुदा तआला ने उन्हें उनकी ईमानदारी का यह बदला दिया कि उनकी आँखें खोल दीं और अपने विशेष फज़ल से आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई उन पर प्रकट कर दी। यही अर्थ आयत के अंतिम वाक्य के हैं فَلَهُمۡ اَجۡرُهُمۡ عِنۡدَ رَبِّهِمۡ ख़ुदा तआला का इनाम जब तक दुनिया में प्रकट नहीं होता आख़िरत में प्रकट नहीं होता। इसलिए दुनिया में ख़ुदा तआला पर ईमान लाने का यह इनाम मिलता है कि ऐसे व्यक्ति को ख़ुदा तआला पूरा मार्ग दर्शन करता है और बर्बाद नहीं करता है। इसी की तरफ यह आयत भी इशारा करती है। وَاِنۡ مِّنۡ اَهۡلِ الۡکِتٰبِ اِلَّا لَیُؤۡمِنَنَّ بِهٖ قَبۡلَ مَوۡتِهٖ अर्थात जो लोग वास्तव में पुस्तक वाले हैं और सच्चे दिल से अल्लाह तआला और उसकी किताबों पर ईमान लाते और कर्म करते हैं वह अंतत: इस नबी पर ईमान ले आएंगे। तो ऐसा ही हुआ। हां दुष्ट आदमी जिन्हें पुस्तक वाला नहीं कहना चाहिए वह ईमान नहीं लाते है। ऐसा ही इस्लाम के संस्थापक के जीवन में इसके कई उदाहरण पाए जाते हैं जिससे पता चलता है कि ख़ुदा तआला ऐसा कृपालु तथा दयालु है अगर कोई एक कण भी भलाई करे तब भी उसके बदले में इस्लाम में इसे प्रवेश कर देता है जैसा कि एक हदीस भी है कि किसी सहाबी ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में निवेदन किया कि मैं कुफ्र की हालत में केवल ख़ुदा तआला को ख़ुश करने के लिए बहुत कुछ माल ग़रीबों को दिया था। क्या इसका इनाम भी मुझ को होगा। तो आपने फ़रमाया कि वही सदके हैं जो तुझ को इस्लाम की तरफ खींच लाए। तो इसी तरह जो व्यक्ति किसी ग़ैर धर्म में ख़ुदा तआला को अकेला और किसी साझी से रहित जानता है और उसे प्यार करता है तो ख़ुदा तआला आयत فَلَهُمۡ اَجۡرُهُمۡ عِنۡدَ رَبِّهِمۡ के अनुसार उसे इस्लाम में प्रवेश कर देता है .....

किताब बहरुल जवाहर में लिखा है कि अबू ख़ैर नामक एक यहूदी था जो नेक तबीयत और सच्चा आदमी था। और ख़ुदा तआला को ही ला शरीक जानता था। एक बार वे बाज़ार में चला जाता था तो एक मस्जिद से यह शब्द निकला, कि एक लड़का कुरआन शरीफ की यह आयत पढ़ रहा था:

الٓمّٓ اَحَسِبَ النَّاسُ اَنۡ یُّتۡرَکُوۡۤا اَنۡ یَّقُوۡلُوۡۤا اٰمَنَّا وَهُمۡ لَا یُفۡتَنُوۡنَ

अर्थात क्या लोग समझते हैं कि यूं ही वह मुक्ति पा जाएगे केवल इस शब्द से कि हम ईमान लाए। और अब तक ख़ुदा के रास्ते में उनका परीक्षण नहीं किया गया कि क्या उन में ईमान लाने वालों की सी दृढ़ता और ईमानदारी और निष्ठा भी है या नहीं? इस आयत ने अबू ख़ैर के दिल पर बड़ा प्रभाव किया और उसके दिल को नर्म कर दिया। तब वह मस्जिद की दीवार के साथ खड़ा होकर फूट फूट कर रोने लगा। रात हज़रत सय्यदना व मौलाना मुहमद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस के सपने में आए और फरमाया

یَا اَبَاالۡخَیۡرِ اَعۡجَبَنِیۡ اَنَّ مِثۡلَکَ مَعَ کَمَالِ فَضۡلِکَ یُنۡکِرُ بِنُبُوَّتِیۡ

अर्थात हे अबुल ख़ैर मुझे आश्चर्य हुआ कि तेरे जैसा इंसान भी अपने अद्भुत अनुग्रह और सम्मान के मेरी नबुव्वत से इनकार करे। इसलिए सुबह होते ही अबुल ख़ैर मुसलमान हो गया और अपने इस्लाम का ऐलान कर दिया।

सारांश यह कि मैं इस बात को पूरी तरह समझ नहीं सकता कि एक व्यक्ति ख़ुदा तआला पर ईमान लाए और यह एकमात्र ला शरीक समझे और ख़ुदा उसे जहन्नम से तो मुक्ति दे मगर अन्धेपन से मुक्ति न दे हालांकि मुक्ति की जड़ अनुभूति है जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है مَنۡ کَانَ فِیۡ هٰذِهٖۤ اَعۡمٰی فَهُوَ فِی الۡاٰخِرَةِ اَعۡمٰی وَاَضَلُّ سَبِیۡلًا

अर्थात जो व्यक्ति इस संसार में अंधा है वह दूसरे संसार में भी अंधा ही होगा या इससे भी बुरी अवस्था में। यह बात बिल्कुल सच है कि जिस ने ख़ुदा के रसूलों को पहचान नहीं उसने ख़ुदा को भी नहीं पहचाना। ख़ुदा के चेहरे का आइना उसके रसूल हैं। प्रत्येक जो ख़ुदा देखता है उसी दर्पण के माध्यम से देखता है। तो यह किस प्रकार की मुक्ति है कि एक व्यक्ति दुनिया में सारी उम्र आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का विरुद्ध रहा और इनकार करने वाला रहा और कुरआन शरीफ का इन्कार करने वाला रहा और ख़ुदा तआला ने उसे आँखें न प्रदान कीं और दिल नहीं दिया और वह अंधा ही रहा और अंधा मर गया और फिर मुक्ति भी पा गया। यह अजीब मुक्ति है और हम देखते हैं कि ख़ुदा तआला जिस व्यक्ति पर दया करना चाहता है पहले उसे आंखें देता है और अपनी ओर से यह ज्ञान प्रदान करता है। सैंकड़ों आदमी हमारे सिलसिले में ऐसे होंगे कि वह मात्र सपना या इल्हाम के माध्यम से हमारी जमाअत में दाख़िल हुए हैं और ख़ुदा तआला की हस्ती बहुत रहम करने वाली है अगर कोई एक कदम उसकी तरफ आता है तो वह दो कदम आता है। और जो व्यक्ति उसकी ओर जल्दी से चलता है तो वह उसकी ओर दौड़ कर आता है और नेत्रहीन की आँखें खोलता है। फिर क्योंकर स्वीकार किया कि एक व्यक्ति उसकी हस्ती पर ईमान लाया और सच्चे दिल से उसे अकेला और साझी रहित समझा उस से मुहब्बत की और वलियों में दाख़िल हुआ किया। फिर ख़ुदा ने उसे अंधा रखा और ऐसा अंधा रहा कि ख़ुदा के नबी की पहचान न कर सका। इसी के समर्थन में यह हदीस है कि مَنۡ مَاتَ وَلَمۡ یَعۡرِفۡ اِمَامَ زَمَانِهٖ فَقَدۡ مَاتَ مِیۡتَةً الۡجَاهِلِیَّةِ

अर्थात जिसने अपने ज़माने के इमाम को पहचान न वह अज्ञानता की मौत मर गया और सीधे पथ से वंचित रहा।

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी खज़ायन,भाग 22, पृष्ठ 149 -151)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

हमारा मानना है कि इंशा अल्लाह एक दिन हम सफल होंगे, हम विजयी होंगे।

हमारा विश्वास है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार जिस मसीह मौऊद और इमाम महदी ने इस्लाम के पुनरोद्धार के लिए आना था वह आ चुका है।

मसीह और महदी एक ही हस्ती है आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आने वाले मसीह और महदी को एक ही हस्ती बताया है।

आने वाले का दर्जा नबी है, आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक हदीस में उसे चार बार अल्लाह का नबी कहा है, वह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शरीयत के साथ आया है और कोई नई शरीयत लेकर नहीं आया।

हम दुनिया में यह संदेश पहुंचा रहे हैं कि अपने पैदा करने वाले रब्ब को पहचानो और उसके अधिकार अदा करो और यह भी बता रहे हैं कि कैसे आप ख़ुदा तआला के क़रीब हो सकते है, इसका सबसे अच्छा माध्यम है कि इस्लाम की सच्ची और वास्तविक शिक्षाओं पर अनुकरण करो।

मैं एक समय से बता रहा हूं कि अगर हम ने न्याय से काम न लिया और बड़ी शक्तियों ने ग़रीब देशों के अधिकार न दिए और ग़रीब देशों की दौलत लूटनी बंद न की तो आप को यकीन होना चाहिए कि युद्ध आप के दरवाज़े पर है।

अगर तीसरे विश्व युद्ध से बचना है तो इसका एक ही समाधान है कि अपने पैदा करने वाले की ओर लौटो और एक दूसरे के अधिकार देना, एक दूसरे से सहानुभूति और सम्मान से पेश आओ, यदि ऐसा नहीं करोगे तो फिर बचोगे नहीं।

--- (डेनमार्क के रेडियो चैनल से हुज़ूर अनवर का साक्षात्कार, हुज़ूर अय्यदहुल्लाह बिनसरेहिल अज़ीज़ का दुनिया के लिए अहमदियत अर्थात सच्चे इस्लाम की शांति प्रदत्त संदेश और सुनहरी नसीहतें) - (भाग-1)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनसरेहिल अज़ीज़ के डेनमार्क, स्वीडन के दौरे मई,जून 2016 ई की झलकियां।

10 मई 2016 (मंगलवार) सुबह चार बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बिनसरेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद नुसरत जहां में आकर फजर की नमाज़ पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने आवास पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बिनसरेहिल अज़ीज़ ने दफतर की डाक, ख़त और रिपोर्ट देखें हिदायतें दीं।

एक रेडियो के प्रतिनिधि का हुज़ूर अनवर से साक्षात्कार

कार्यक्रम के अनुसार साढ़े दस बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय आए। डेनमार्क के रेडियो चैनल RADIO 24 SYV दो पत्रकार ऋषि रशीद साहिबा हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बिनसरेहिल अज़ीज़ का साक्षात्कार लेने के लिए आई हुई थीं।

*** पत्रकार ने पहला सवाल यह है कि आप अपने आप को अहमदिया जमाअत क्यों कहते?**

इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बिनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भविष्यवाणी फरमाई थी कि इस्लाम पर एक ऐसा समय आएगा कि मुसलमान इस्लाम की मूल शिक्षाओं को भूल जाएंगे और इस्लाम का केवल नाम बाकी रह जाएगा। कुरआन अपनी असली हालत में मौजूद तो होगा लेकिन इस पर अनुकरण न होगा और कुरआन की ग़लत व्याख्याएं की जाएंगी। जब ऐसा समय आएगा तो अल्लाह तआला मुसलमानों के निर्देश के लिए मसीह और महदी को भेजेगा। हमारा विश्वास है कि इस भविष्यवाणी के अनुसार जिस मसीह मौऊद और इमाम महदी ने इस्लाम के पुनरोद्धार के लिए आना था वह आ चुका है और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मसीह और महदी के आने की जो निशानियां बताई थीं वे सब पूरी हो चुकी हैं।

दूसरे मुसलमान कहते हैं कि मसीह और महदी दो अलग अस्तित्व है। मसीह आसमान पर बैठे हैं और अंतिम समय में आएंगे और महदी अब तक भेजे नहीं गए। जब हम कहते हैं कि मसीह और महदी एक ही अस्तित्व हैं और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आने वाले मसीह और महदी को एक ही अस्तित्व बताया है।

हम कहते हैं कोई भी व्यक्ति जो इस दुनिया में आता है वह हज़ारों साल जीवित नहीं रह सकता। प्रत्येक व्यक्ति अपनी शारीरिक उम्र पाकर मृत्यु पाता है। हम कहते हैं कि अगर इतना लंबा समय कोई जीवित रहने का हकदार था तो वह सब से प्यारे नबी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे। हम कहते हैं कि ईसा अलैहिस्सलाम वफात पा चुके हैं और जो मसीह ने भी आना था उस का प्रतिरूप बनकर आना था।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया यह भी भविष्यवाणी था कि मसीह और महदी आएगा वह अपनी जमाअत भी बनाएगा। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भविष्यवाणी भी फरमाई थी कि जिस तरह यहूदियों के विभिन्न संप्रदाय बने थे इसी तरह इस्लाम में भी विभिन्न संप्रदाय बनेंगे। और उनमें से एक संप्रदाय इस्लाम की सच्ची और वास्तविक शिक्षाओं का पालन करने वाला होगा और वह जमाअत होगी। तो इसी कारण से हम अपने आप को जमाअत अहमदिया कहते हैं।

*** पत्रकार ने सवाल किया जब में यहाँ किसी कार्यक्रम में सुन्नी और शिया इमाम और विद्वानों को बुलाती हूँ और जब यह कहती हूँ कि हम अपने इस कार्यक्रम में जमाअत अहमदिया के प्रतिनिधि को भी बुलाना चाहते हैं तो वे इनकार कर देते हैं और ये लोग आप को अपनी तरह का मुसलमान नहीं समझते।**

इस सवाल के जवाब में हज़ूर अनवर ने फरमाया: आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक भविष्यवाणी यह भी थी कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया था तुम में नबुव्वत स्थापित रहेगी जब तक अल्लाह तआला चाहेगा। फिर वह उसे उठा लेगा और नबुव्वत के तरीके पर ख़िलाफत स्थापित होगी। फिर उसके बाद उसके भाग्य के अनुसार कष्ट देने वाली बादशाहत स्थापित होगी (और यह ज़माना 300 साल तक लम्बा रहेगा।) इसके बाद फिर पहले से बढ़कर अत्याचारी बादशाहत कायम होगी। (और यह अंधेरा समय एक हज़ार साल तक लम्बा होगा।) फिर अल्लाह तआला की दया जोश में आ जाएगी और इसके बाद नबुव्वत के तरीके पर ख़िलाफत स्थापित होगी।

इस भविष्यवाणी के अनुसार तेरहवीं सदी में या चौदहवीं सदी के शुरू में आने वाले मसीह और महदी ने आना था। हम कहते हैं कि वह आ चुका है जब वे कहते हैं कि नहीं आया।

हम कहते हैं कि आने वाले का दर्जा नबी है। वह नबी है और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक हदीस में उसे चार बार नबी अल्लाह कहा है। और वह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शरीयत के साथ आया है और कोई नई शरीयत लेकर नहीं आया। कुरआन वही है और इस्लामी शिक्षाएं वही हैं कोई नई शिक्षाएं नहीं। इस दृष्टि से वह प्रतिरूप रूप में नबी है। जबकि दूसरे कहते हैं कि वह किसी रूप में भी नबी नहीं है। तो हम में और उन में यह मतभेद है।

अगर आप यह कहते हैं कि अब आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद कोई नबी नहीं आ सकता तो यह ख़ुदा तआला के गुणों और उस की कुदरत को ख़त्म करने वाली बात है और कोई आदमी यह अधिकार नहीं रखता कि वह ऐसी हरकत करे तो यह कारण है कि दूसरे हमें मुसलमान के रूप में स्वीकार नहीं करते।

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

वाकफ़ीन ज़िन्दगी के लिए जिनके ज़िम्मा जमाअत की सेवा का काम है जिनमें मुरब्बियान पहले नंबर पर हैं कि अपने सेहत को बनाए रखने और सख्त जान बनने के लिए व्यायाम या सैर की नियमित आदत डालें। दूसरे इन पश्चिमी देशों में अस्वास्थ्यकर आहार भी बड़ा आम है जिसे वे खुद भी जंक फूड कहते हैं। इससे बचना चाहिए।

बहरहाल हमें स्वस्थ वाकफ़ीन ज़िन्दगी और मुरब्बियान चाहिए इस दृष्टि से उन्हें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वे अपने स्वास्थ्य के प्रति लापरवाह और सुस्त न हों ताकि अपने काम को उत्तम रूप में कर सकें।

कई बार धार्मिक सेवा के लिए आवाज़ को ऊंचा करना पड़ता है इसलिए इस मामले में भी जिनके ज़िम्मा यह काम है उन्हें इस ओर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए।

वास्तव में नेकियों में बढ़ने वाले और अपनी स्थितियों को अल्लाह की आज्ञाओं के अनुसार कायम रखने वाले वही लोग होते हैं जो माँ की तरह चिंतित रहते हैं कि उनकी नमाज़ों में दुआ में कमी कहीं उनके किसी कमज़ोरी और अवहेलना के परिणाम न हो। इसलिए उन्हें ऐसा आध्यात्मिक मरीज़ न बना दे जो लाइलाज हो जिसकी बीमारी बहुत फैल चुकी हो।

इस बात को याद रखना चाहिए कि अपने उपकार करने वालों को और उनकी संतानों के लिए विशेष रूप से दुआएं करनी चाहिए। ख़ुशी और ग़मी के मौके पर उन्हें अनुभव करना चाहिए और जमाअत के लोगों के लिए सामान्य रूप में भी हमारी ख़ुशी और ग़मी की अभिव्यक्ति चाहिए क्योंकि जमाअत भी एक अस्तित्व है और उसी समय भावना पैदा होती है जब हम हर जमाअत के व्यक्ति के दर्द और इस ख़ुशी को महसूस भी करें और यह चीज़ है जो कि जमाअत में इकाई बनाने का भी माध्यम है।

कुछ लोग कई बार कह देते हैं कि अख़बारों में विज्ञापन देने का क्या फायदा। विज्ञापन देने का लाभ होता है क्योंकि इन अख़बारों के परिसंचरण से जमाअत का परिचय लोगों में पहुंचता है जबकि साहित्य आप बड़ी मुश्किल से दो महीने में जितना बांटते हैं कई बार एक अख़बार से एक दिन में उससे अधिक लोगों तक वह ख़बर पहुंच जाती है। आजकल अल्लाह तआला की कृपा से अख़बारों के द्वारा जमाअत का परिचय होता है जैसा कि मैंने कहा बहुत जगह पर हो रहा है।

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला अन्हो की वर्णन की गई कुछ रिवायतों का वर्णन और इस बारे में जमाअत के लोगों को नसीहतें।

आदरणीय डाक्टर इदरीस बंगूरा साहिब नायब अमीर सीरालोन और आदरणीया मंसूरा बेगम साहिबा पत्नि आदरणीय ख़ालिद सैफुल्लाह साहिब नायब अमीर आस्ट्रेलिया का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ैब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 22 जुलाई 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मेहनत व परिश्रम की आदत और सेहत बनाए रखने और शरीर को चुस्त रखने के लिए आप की किया आदत थी। यह उल्लेख करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो फरमाते हैं कि आप सुस्त कभी न थे बल्कि बहुत मेहनती थे और एकांत प्रिय होने के बावजूद कठिनाई से न घबराते थे और कई बार ऐसा होता था कि आप को जब किसी सफर पर जाना पड़ता तो सवारी का घोड़ा नौकर के हाथ आगे रवाना कर देते और आप पैदल बीस पच्चीस मील का सफर तय करके मंज़िल पर पहुंच जाते। बल्कि अक्सर आप पैदल ही सफर करते थे और सवारी पर कम चढ़ते और यह आदत पैदल चलने की आप को आख़री उम्र तक थी और सत्तर साल से अधिक उम्र में जबकि कुछ सख्त बीमारियां आप को थीं। प्राय दैनिक सैर के लिए जाते और चार पाँच मील दैनिक फिर आते और कभी कभी सात मील पैदल फिर लेते थे और बुढ़ापे से पहले का हाल आप फरमाया करते थे कि कभी कभी सुबह नमाज़ से पहले उठ कर टहलने के लिए चल पड़ते थे और वडाला तक पहुंच कर(जो बटाला की सड़क पर कादियान से लगभग साढ़े पाँच मील पर एक गांव है वहां जाकर) सुबह की नमाज़ का समय होता।

(उद्धरित रयूयू आफ रिलीजनज़ उर्दू नवम्बर 1916 ई भाग 15 नम्बर 11 पृष्ठ 402)

अत: यह नमूना है हमारे लिए, विशेष रूप से वाकफ़ीन ज़िन्दगी के लिए जिनके ज़िम्मा जमाअत की सेवा का काम है। जिनमें मुरब्बियान पहले नंबर पर हैं कि अपने सेहत को बनाए रखने और सख्त जान बनने के लिए व्यायाम या सैर की नियमित आदत डालें। अगर समय की कमी के कारण या किसी भी कारण से सैर नहीं कर सकते तो कुछ समय व्यायाम के लिए अवश्य निकालना चाहिए। कुछ मुरब्बियान जो अभी युवा हैं उनके शरीर बता रहे हैं कि व्यायाम नहीं करते। जब पूछो तो कहते हैं कि व्यायाम करते थे। कुछ समय से छोड़ा हुआ है। जितने बड़े काम हमारे मुबल्लिग़ों के ज़िम्मे हैं, मुरब्बियान के ज़िम्मे हैं उन्हें अपने आप को चुस्त और स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम की ओर नियमित ध्यान देना चाहिए। हमारे बाहर के विश्वविद्यालयों के मुरब्बियान अपनी पढ़ाई पूरी करके कुछ समय प्रशिक्षण के लिए रबवा भी जाते हैं। वहां इनके चिकित्सीय जांच भी होती हैं। डॉक्टर नूरी साहिब जो वहां दिल के विशेषज्ञ हैं उन्होंने मुझे लिखा कि माशा अल्लाह हर लिहाज़ से बड़े अच्छे मुरब्बियान हैं लेकिन इनमें कई ऐसे थे जो वज़न के मामले में ख़तरनाक हद तक अधिक वज़न रखते हैं। उन्हें इस ओर ध्यान देना चाहिए। कर्म क्षेत्र में जाकर तो और भी अधिक इस मामले में अनदेखी का शिकार हो जाते हैं।

तो एक तो हमारे मुरब्बियान और वाकफ़ीन ज़िन्दगी को किसी न किसी प्रकार की कसरत ज़रूर करनी चाहिए और दूसरे इन पश्चिमी देशों में अस्वास्थ्यकर आहार भी बड़ा आम है जिसे वे खुद भी जंक फूड कहते हैं। इससे बचना चाहिए। इसलिए इसका भी ध्यान रखें। अगर अकेले हैं अगर फेमलियाँ साथ नहीं हैं तो भी कई बार जहां मिशन हाउस में हैं इतना समय तो मिल जाता है कि थोड़ा बहुत खाना बनाना भी मुरब्बी को आना चाहिए। बहरहाल इस ओर ध्यान देना चाहिए। यह केवल आप

को नसीहत नहीं कर रहा बल्कि ख़ुद भी अल्लाह की कृपा से नियमित साइकिल एक्सर साइज़ मशीन पर या अन्य मशीनों पर व्यायाम करता हूँ। तो ख़ुदा तआला अभी तो तौफीक दे रहा है। बहरहाल हमें स्वस्थ वाकफ़ीन ज़िन्दगी और मुरब्बियान चाहिए। इस दृष्टि से उन्हें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वे अपने स्वास्थ्य के प्रति लापरवाह और सुस्त न हों ताकि अपने काम को उत्तम रूप में कर सकें।

एक और घटना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद ने वर्णन की है। आजकल तो लाऊड स्पीकर आदि के माध्यम से हम अपनी आवाज़ हर जगह पहुंचा लेते हैं और इसलिए हम में से कई लोगों को अधिक उच्च बोलने की आदत नहीं रही या एक हद तक उच्च बोल सकते हैं। विशेष रूप से जो वाअज़ीन (उपदेशक) हैं। मुरब्बियान हैं जब कर्म क्षेत्र में जाते हैं तो कई बार तब्लीग़ करनी पड़ती है इन को भी याद रखना चाहिए कि उन्हें उच्च बोलने की प्रैक्टिस करनी चाहिए। कई बार विशेष रूप से गरीब देशों में साउंड सिस्टम उपलब्ध नहीं होते। पुराने ज़माने में आवाज़ पहुंचाने का माध्यम नहीं था। भीड़ को आवाज़ पहुंचाने के लिए बड़ी कोशिश करनी पड़ती थी। बड़ा मुश्किल था और इसलिए लोग अभ्यास भी करते थे ताकि आवाज ऊंची करें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सामान्य परिस्थितियों में तो बहुत धीमी आवाज़ में सम्बोधित हुआ करते थे लेकिन आवश्यकता के अनुसार जब दुनिया को इस्लाम की शिक्षा के बारे में बताना हो तब आपकी क्या स्थिति होती थी। उसका एक नक्शा हज़रत मुस्लेह मौऊद ने यह वर्णन किया है कि "हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जब लाहौर में भाषण देने के लिए खड़े हुए तो लाहौर के सबसे बड़े हॉल (जहां व्याख्यान देना था।) आदमियों से भरा हुआ था और इतनी भीड़ थी कि दरवाज़े खोल दिए बल्कि बाहर कनातें लगाई गईं और वह भी दर्शकों से भर गईं। फरमाते हैं कि शुरू में तो जैसा कि आम नियम है आपकी आवाज़ थोड़ा धीमी थी और कुछ लोगों ने शोर भी किया मगर बाद में जब आप बोल रहे थे तो ऐसा मालूम होता था जैसे आसमान से कोई बिगुल बजाया जा रहा है और लोग सम्मोहित बने बैठे थे। तो फरमाते हैं कि आवाज़ की ऊंचाई धार्मिक सेवाओं के लिए महत्त्वपूर्ण हालत में से है।

(अल्फज़ल 2 मार्च 1960 ई जिल्द 46/14 नम्बर 49 पृष्ठ 2)

कई बार धार्मिक सेवा के लिए आवाज़ को ऊंचा करना पड़ता है इसलिए इस मामले में भी जिनके ज़िम्मा यह काम है उन्हें इस ओर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए।

कई बार कुछ लोग बड़ी चिंता व्यक्त करते हैं कि हमारी नेकी की हालत एक जैसी नहीं रहती। बड़ी चिंता है यह इस लिहाज से बड़ी अच्छी बात है कि इंसान अपनी समीक्षा करता रहे कि यह स्थिति जो मुझ में अच्छाई की कमी की है या जो अच्छाई में शौक या इबादत में शौक पहले था उसमें जो कमी है इस की समीक्षा करता रहे कि यह क्यों हुई और यह चिंता हो कि अधिक देर न रहे और इसके इलाज की चिंता करे। तो बहरहाल यह बड़ी अच्छी बात है लेकिन कई बार यह भी होता है कि यह कोई बुराई नहीं होती बल्कि नेकी और अधिक नेकी और कम नेकी की जो स्थिति है वह आती जाती रहती है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास भी एक व्यक्ति आया। आप के एक सहाबी आए। उन्होंने कहा कि या रसूलल्लाह मैं कपटी हूँ। मैं जब आपके पास मज्लिस में बैठता हूँ तो मेरी हालत और होती है और जब आप की मज्लिस से उठ कर चला जाता हूँ तो मेरी हालत और होती है। अर्थात नेकी और दिल की पवित्रता की स्थिति वह नहीं रहती जो आपकी संगत में है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि यही तो मोमिन की निशानी है तुम मुनाफिक नहीं हो।

(उद्धरित सुनन तिर्मिज़ी अबवाबुल कियाम: हदीस 2514)

तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सोहबत का जो प्रभाव है स्पष्ट है आप की कुव्वते कुदसिया और आप की संगत ने वह असर तो डालना था और डाला कि आपके पास बैठने वाले जो शुद्ध दिल होकर आकर बैठते थे कुछ सीखने के लिए बैठते थे, अल्लाह तआला से संबंध के स्तर को बढ़ाने के लिए बैठते थे। उन पर असर होता था और फिर बाहर जाकर इसमें कमी भी होती थी लेकिन बहरहाल उन सहाबी के दिल में ख़ुदा तआला का भय था, ईमानदारी थी इसलिए उन्हें चिंता पैदा हुई कि धर्म में कमी की स्थिति कहीं लंबी न होती चली जाए और होते होते मुझे धर्म से दूर न कर दे। मेरे अंदर कोई पाखंड पैदा न हो जाए। यह सोच थी सहाबा की और जब यह अहसास होता है तो फिर मनुष्य दुआ और इस्तिग़फ़ार से अपनी स्थिति बेहतर करने के लिए ध्यान करता है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो ने इस लेख का वर्णन करते हुए एक जगह फरमाया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाया करते थे कि "कुछ बच्चों के स्वास्थ्य आमतौर माताओं के भ्रम के कारण ठीक रहते हैं। बच्चे को थोड़ी सी भी तकलीफ हो तो माँ उसे बहुत अधिक समझ लेती है कि पता नहीं क्या हो गया और परिणाम यह होता है कि वह इसका ध्यान से इलाज करवाती है और बच्चा बीमारी के अधिक हो जाने से बचाया जाता है। (अधिक बढ़ने और ख़तरनाक होने से बच जाता है।) लेकिन कुछ माताऐं ऐसी होती हैं जिन्हें बच्चे की बीमारी का तब पता चलता है जब वह ख़तरनाक रूप धारण कर लेती है और इलाज मुश्किल हो जाता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि मां का भ्रम भी बच्चे के स्वास्थ्य के लिए बहुत उपयोगी होता है। इसी तरह अपनी ज़ात में इस प्रकार का भ्रम कि शायद यह कोई बीमारी न हो बहुत उपयोगी है। (जैसे आध्यात्मिकता का जहां तक संबंध है अगर कोई अध्यात्म में कमी पैदा होती है, इबादत में कमी पैदा होती है, किसी नेकी करने में कमी पैदा होती है, और इस भ्रम हो कि मैं वास्तव में ख़ुदा तआला से दूर तो नहीं हट रहा तो ऐसा भ्रम भी उपयोगी होता है।) फरमाया कि "इस तरह मनुष्य खतरे से मुकाबले के लिए तैयार हो जाता है और अपने आप को इस हमले से बचा लेता है।"

(अल्फज़ल 7 अगस्त 1949 ई जिल्द 3 नम्बर 180 पृष्ठ 2)

तो वास्तव में नेकियों में बढ़ने वाले और अपनी स्थितियों को अल्लाह तआला की आज्ञाओं के अनुसार कायम रखने वाले वही लोग होते हैं जो माँ की तरह चिंतित रहते हैं कि उनकी नमाज़ों में दुआ में कमी कहीं उनके किसी कमज़ोरी और अवहेलना का परिणाम न हो। इसलिए उन्हें ऐसा आध्यात्मिक मरीज़ न बना दे जो लाइलाज हो जिसकी बीमारी बहुत फैल चुकी हो। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा भाग्यशाली थे कि जब अपनी स्थिति पर विचार कर चिंतित होते तो आप की संगत में चले जाते थे और फिर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़ुव्वत कुद्सी के कारण अपना इलाज कर लेते थे लेकिन हमें तो इस चिंता में रहते हुए अपनी इबादतों दुआओं और इस्तिग़फ़ार के द्वारा हमेशा अपनाए रखना चाहिए और इस माध्यम से अपना इलाज करते रहना चाहिए। अगर हमारा भ्रम भी हो तो यह भ्रम भी लापरवाही की तुलना में बेहतर है क्योंकि कई बार ऐसा होता है कि लापरवाही ख़ुदा तआला से दूर ले जाती है और फिर धीरे धीरे हम धर्म से भी दूर हट जाते हैं तो लाइलाज आध्यात्मिक रोगी बन जाते हैं। इसलिए इस मामले में बहुत ध्यान देने की आवश्यकता है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो एक बार यह विषय उल्लेख फरमा रहे थे कि ख़ुशी और ग़मी का संबंध भावनाओं से है। जैसे अगर किसी घर में शादी है तो वह इस शादी की ख़ुशी के लिए अगर ऋण भी लेना हो तो ऋण लेकर वह ख़ुशी करने की कोशिश करता है और उसके क़रीबी भी ख़ुशी में शामिल होते हैं लेकिन जिन्हें इससे कोई संबंध नहीं होता उनके लिए इस व्यक्ति की ख़ुशी करना या उसके परिवार वालों का ख़ुशी करना या करीबियों का आनन्द करना और इसके लिए ख़ुद को संकट में डालना या ऋण लेना कोई हैसियत नहीं रखता। उन्हें इससे क्या उद्देश्य है कि कोई व्यक्ति ख़ुशी मनाता है या नहीं या ऋण ले कर मनाता है या नहीं मनाता। इसी तरह कोई व्यक्ति अपने परिवार का प्रायोजक हो अगर वह मर जाए तो घर में एक शोक होता है लेकिन दूसरे जिनका इससे कोई संबंध नहीं होता उनके लिए उसका मर जाना कोई हैसियत नहीं रखता। हज़ारों लोग प्रतिदिन मरते हैं वफ़ातें होती हैं सूचनाएं आती हैं लेकिन जिन्हें हम जानते नहीं बावजूद उनके बारे में पता होने के उनका एहसास नहीं होता जबकि अपना कोई क़रीबी मर जाता है तो बड़ी शिद्दत से महसूस होता है। फिर कुछ ऐसे भी होते हैं जो लोगों के लिए बड़ी परेशानी का कारण बने होते हैं। अन्यायी डाकू हैं, आतंकवादी हैं जिनके मरने से एक वर्ग को अफसोस के स्थान पर ख़ुशी हो रही होती है लेकिन उनके क़रीबियों को उसका दु:ख भी होता है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो फरमाते हैं कि "यह भावनाओं का अजीब क्रम है इस पर विचार करने से अजीब स्थिति होती है। एक बात एक के लिए ख़ुशी की घड़ी और राहत की अकेली घड़ी होती है मगर दूसरे के लिए शोक का प्रभाव रखती है और कई ऐसे होते हैं कि उन्हें न किसी की ख़ुशी में हिस्सा होता है न ग़म में। (फरमाते हैं कि) यह लेख मुझे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक वाक्य में सिखाया था। (फरमाते हैं कि) हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम नियमित अख़बार पढ़ा करते थे। (इस में भी हमारे उन लोगों के लिए जिनके ज़िम्मा धर्म के कामों की ज़िम्मेदारी है इसमें एक शिक्षा यह भी है कि उन्हें नियमित अख़बार भी पढ़ना चाहिए और छोटी छोटी ख़बरों को भी देख लेना चाहिए। बहरहाल फरमाते

हैं आप नियमित अख़बार पढ़ा करते थे।) एक दिन 1907 ई की बात है। अखबार पढ़ते हुए मुझे आवाज़ दी। "महमूद" यह आवाज़ इस तरह दी कि जैसे कोई जल्दी का काम होता है। (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हज़रत मुस्लेह मौऊद को आवाज़ दी और ऐसी आवाज़ थी जैसे कोई जल्दी का काम होता है। कहते हैं।) जब मैं हाज़िर हुआ तो मुझे ख़बर सुनाई। एक व्यक्ति (मुझे उसका नाम याद नहीं कि वह) मर गया है। (हज़रत मुस्लेह मौऊद कहते हैं) उस पर मेरी हंसी निकल गई और मैंने कहा मुझे इससे क्या। हज़रत साहिब ने कहा उसके घर में तो शोक पड़ा होगा और तुम कहते हो मुझे क्या।? (हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि) इसका क्या कारण है। कारण यह है कि जिसके साथ संबंध न हो इसके कष्ट का असर नहीं होता और इसी तरह अगर कोई ख़ुशी की बात है तो इस ख़ुशी का असर नहीं होता। यह बात हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो ने जब वर्णन की तो यह उस समय का मौका है जब हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल रज़ि अल्लाह के बेटे मियां अब्दुस सलाम साहिब के निकाह का मौका था और फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद ने अपनी भावनाओं को इस तरह व्यक्त फरमाया कि अगर हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल रज़ि अल्लाह जीवित होते तो कैसे ख़ुशी मनाते। ख़ुद कितनी दुआएं करते और इसलिए दूसरों को भी कितनी दुआओं की तहरीक होती। फरमाया यह मौका और यह सोच हमारे दिलों में विशेष हरकत पैदा करती है। किसी प्रिय के करीबी की ख़ुशी का मौका हो तो यह विशेष हरकत पैदा करती है। यह सोच विशेष हरकत पैदा करती है। कैसे वह हमारा प्यारा अपने क़रीबियों के लिए दुआ करता होगा और कहते हैं कि यह बात ख़ुशी की लहर हमारे शरीर में सिर से पैर तक दौड़ाती है।

(अल्फज़ल 2 नवम्बर 1922 ई जिल्द10 नम्बर 35 पृष्ठ 5)

इसलिए इस बात को याद रखना चाहिए कि अपने उपकार करने वालों को और उनकी संतानों के लिए विशेष रूप से दुआएं करनी चाहिए। ख़ुशी और ग़मी के मौके पर उन्हें अनुभव करना चाहिए और जमाअत के लोगों के लिए सामान्य रूप में भी हमारी ख़ुशी और ग़मी की अभिव्यक्ति चाहिए क्योंकि जमाअत भी एक अस्तित्व है और उसी समय भावना पैदा होती है जब हम हर जमाअत के व्यक्ति के दर्द और इस ख़ुशी को महसूस भी करें और यह चीज़ है जो कि जमाअत में इकाई बनाने का भी माध्यम है।

हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल रज़ि अल्लाह तआला की आज्ञाकारिता की एक घटना वर्णन फरमाते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि "हज़रत ख़लीफा अव्वल रज़ियल्लाहो अन्हो से संबंधित मुझे याद है (कि) वह अब्दुल हकीम मुर्तद पटयालवी से जब वह अहमदी था बहुत प्यार करते थे और वह भी आपसे बहुत सम्बन्ध रखता था यहां तक कि जब उसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का विरोध किया तो उस समय भी उसने लिखा कि आपकी जमाअत में (अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में) केवल मौलवी नूरुद्दीन साहिब के और कोई नहीं जिस में सहाबा का नमूना है। यह व्यक्ति वास्तव में ऐसा है जो में जमाअत के लिए गर्व है। (हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि) अब्दुल हकीम पटयालवी ने एक तफसीर भी लिखी थी और इसमें बहुत कुछ हज़रत ख़लीफा अव्वल रज़ियल्लाहो अन्हो से पूछकर लिखा था। जब अब्दुल हकीम ने अपने स्वधर्म त्याग की घोषणा की तो मैंने देखा आप ने घबरा कर अपने शिष्यों को बुलाया (अर्थात हज़रत ख़लीफा अव्वल ने तुरंत इस स्वधर्म त्याग की घोषणा पर अपने शिष्यों को बुलाया।) और उनसे कहा कि जाओ और जल्दी मेरे पुस्तकालय में से अब्दुल हकीम की तफसीर निकाल दो। (जो तफसीर उसने लिखी थी वह आप के पुस्तकालय में पड़ी हुई उनसे कहा वहाँ से तुरंत निकाल दो। फरमाया कि) ऐसा न हो कि इस वजह से मुझ पर ख़ुदा तआला की नाराज़गी प्रकट हो। (हज़रत मुस्लेह मौऊद कहते हैं कि) हालांकि वह कुरआन की व्याख्या थी और उस में बहुत सी आयतों की व्याख्या उस (व्यक्ति) ने ख़ुद आप से (अर्थात हज़रत ख़लीफा अव्वल से) पूछ कर लिखी थी मगर इसलिए कि उस पर ख़ुदा तआला का प्रकोप हुआ। (उस ने स्वधर्म त्याग किया) उसकी लिखी हुई तफसीर भी आप ने अपने पुस्तकालय से निकलवा दी और अपने ज़ौक के अनुसार समझा कि यह किताब दूसरी पुस्तकों के साथ उन्हें अपवित्र कर देगी।

(अल्फज़ल 21 जून 1944 ई जिल्द 22 नम्बर 143 पृष्ठ 1)

तो यह धार्मिक सम्मान और ख़ुदा तआला का भय है जो हमारे लिए एक नमूना है।

फिर कुछ लोग आपत्ति कर देते हैं कि जमाअत से जैसे किसी को सज़ा मिली है या किसी व्यक्ति के ख़िलाफ कार्रवाई हुई है तो वह कहता है अपने बारे में कहता है कि मेरे ख़िलाफ जो अमुक कार्रवाई हुई है ग़लत हुई है और अमुक व्यक्ति के ख़िलाफ नहीं हुई और उसे इस का समर्थन किया गया है। इस प्रकार के आरोप कोई नई बात नहीं है। हर ज़माने में ऐसे आरोप मिलते हैं। आज भी ये लोग करते हैं। पहले भी किया करते थे। तो ऐसे ही लोगों का उल्लेख करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो फरमाते हैं कि

"वास्तविकता यह है कि निज़ाम को ठीक करने के लिए विचारों की एकता का एक क्षेत्र होता है। हो सकता है कि एक मतभेद बड़ा दिखे लेकिन अगर वह किसी फ़ित्ने का कारण न हो तो इस मतभेद रखने वाले को जमाअत में शामिल होने की अनुमति दे दी जाए लेकिन एक दूसरा व्यक्ति चाहे कम मतभेद रखता हो लेकिन इसका मतभेद किसी फ़ित्ने का कारण हो तो उसे जमाअत से निकाल दिया जाए। फरमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से एक बार एक दोस्त ने पूछा कि मैं अभी शीयअत से निकल कर(शिया था और शीयअत से निकल कर) आया हूं और हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो को हज़रत अबु बकर रज़ियल्लाहो अन्हो और उमर रज़ियल्लाहो अन्हो से बेहतर समझता हूँ (क्योंकि मेरे पर शीयअत का प्रभाव अधिक है।) तो क्या इस विश्वास के होते हुए आपकी बैअत कर सकता हूँ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उन्हें लिखा कि आप बैअत कर सकते हैं लेकिन इस के मुकाबला में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक बार कुछ लोगों को (सज़ा के रूप में) कादियान से बाहर चले जाने का आदेश दिया और उनके बारे में इश्तेहार भी प्रकाशित क्या मगर कारण सिर्फ यह था कि वह पांचों समय नमाज़ में उपस्थित नहीं होते थे और कुछ ऐसे थे कि उनकी सभाओं में हुक्का पीने और व्यर्थ बातों का शुग़ल रहता था।" (हज़रत मुस्लेह मौऊद लिखते हैं कि) अब बताओ हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो को हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहो अन्हो से बेहतर समझने और हुक्का पीने में कौन सी बात बड़ी है। अवश्य हर कोई यही कहेगा कि हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो को हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहो अन्हो से बेहतर समझना बड़ी बात है और हुक्का पीना छोटी बात है मगर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक बड़ा अंतर होने के बावजूद एक व्यक्ति को अपनी बैअत की अनुमति दे दी और हुक्का पीने और हंसी उपहास में संलग्न रहने पर दूसरों को केंद्र से चले जाने की हिदायत फरमाई। हालांकि (आप वर्णन फरमाते हैं कि) एक दावत के अवसर पर ख़ुद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इसका प्रावधान किया था। अत: तुर्कों के राजदूत हुसैन कामी जब कादियान में आया और उसके लिए दावत का प्रावधान किया गया।(हज़रत मुस्लेह मौऊद कहते हैं कि) मैं तो छोटा था मगर मुझे ख़ूब याद है कि एक मजलिस में मौलवी अब्दुल करीम साहिब मरहूम ने उल्लेख किया कि यह लोग सिगरेट के आदी होते हैं। अगर हम ने कोई व्यवस्था न किया तो उसे चोट होगी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कोई हर्ज नहीं, क्योंकि यह ऐसी हराम चीज़ों में से नहीं जैसे शराब आदि होती है। तो आप ने उस चीज़ को जो इस प्रकार की मनाही नहीं रखती जैसी शराब अपने अंदर मनाही रखती है प्रयोग करने पर तो एक व्यक्ति को जमाअत से निकाल दिया और वह जिसने यह कहा था कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहो अन्हो से हज़रत अली को बेहतर समझता हूँ बावजूद इसके कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का अपना विश्वास था कि हज़रत अबु बकर रज़ियल्लाहो अन्हो हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो से बेहतर हैं उसे बैअत करने की अनुमति दे दी। (आप फरमाते हैं कि) वास्तव में कुछ बातें फ़ित्ने के मामले में बड़ी होती हैं हालांकि वे वास्तव में छोटी होती हैं और कुछ बातें समय के फ़ित्ने के मामले में छोटी होती हैं हालांकि वास्तव में वे बड़ी होती हैं।

इसलिए समय के फ़ित्ने की दृष्टि में कभी बड़ी बात को नज़र अंदाज कर दिया जाता है और छोटी बात पर कार्रवाई की जाती है लेकिन (उन लोगों ने जो आपत्ति करने वाले हैं) कभी बुद्धि से काम नहीं लिया। उनका उद्देश्य केवल विरोध करना होता है।

(अल्फज़ल 13 सितम्बर 1961 ई जिल्द 50/15 नम्बर 211 पृष्ठ 4)

और बहुत सारे लोग दूसरे के लिए कह देते हैं। उनके कुछ समर्थक पैदा हो जाते हैं जिन्हें सज़ा मिलती है। उन्हें पता नहीं होता कि असल बात क्या है किस वजह से मिल रही है।? तो इस मामले में अकारण दखल देना नहीं चाहिए या किसी की सिफारिशें नहीं करनी चाहिए। हां जब निज़ाम समझता है समीक्षा की जाती है तो उनकी माफी भी हो जाती है। इस प्रकार के आलोचक जैसा कि मैंने कहा आजकल भी हैं। ग़लत काम करते हैं सज़ा मिले तो बजाय सुधार के अधिक निज़ाम के ख़िलाफ भी बोलते हैं और फिर यह भी मांग होती है कि हम जैसे भी हैं वैसे ही रहेंगे

फिर भी जमाअत के निज़ाम में हमें अपना हिस्सा बनाऐं हम ने सुधार नहीं करना।

यहाँ यह भी स्पष्ट कर दूं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बेशक तुर्क राजदूत के लिए तो उस की आवश्यकता की चीज मंगवा दी जो हराम तो नहीं जैसा कि घटना में भी लिखा है लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को हुक्का धूम्रपान आदि बड़ा नापसंद था और कई बार आप ने इससे बड़ी घृणा व्यक्त की है।

तब्लीग़ के लिए किन साधनों का उपयोग करना चाहिए और कैसे करना चाहिए इस बारे में एक अवसर पर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो ने फरमाया कि "इस समय नज़ारत दावत व तब्लीग़ पम्फेलट के द्वारा तब्लीग़ करती है। (पमफेलट बांटे जाते हैं) लेकिन पमफेल्ट ऐसी चीज़ है जिसका बोझ अधिक देर तक नहीं उठाया जा सकता।" आप फरमाते हैं कि "हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में प्रचार इश्तेहार द्वारा होता था वह इश्तेहार दो चार पन्नों के होते थे और उनसे देश में तहलका मच जाता था। उनका बहुतायत से प्रकाशन किया जाता था उस समय की दृष्टि से बहुतायत अर्थ एक दो हज़ार की संख्या के होते थे। कभी कभी दस दस हज़ार की संख्या में भी इश्तेहार प्रकाशित किए जाते थे लेकिन (फरमाते हैं कि) अब हमारी जमाअत बीसियों गुना अधिक हैं अब इश्तेहार का प्रचार यह होगा कि इश्तेहार पचास पचास हज़ार बल्कि लाख लाख की संख्या में प्रकाशित हों फिर देखो कि इश्तेहार कैसे लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचते हैं।"

अल्लाह तआला की कृपा है तो कुछ जगह कुछ समाचार लाखों तक पहुंच जाते हैं कई कई लाख तक पहुंच जाते हैं और इसका प्रभाव दूसरे देशों में भी होता है। अब अमेरिका से ही एक सूचना थी कि स्वीडन की समाचार एजेंसी या टेलीविजन है उन्होंने वहां हमारे प्रतिनिधि से संपर्क किया कि स्वीडन में इस्लाम के बारे में अब काफी ध्यान पैदा हो रहा है तो हम ने इस लिहाज से कि आप का साक्षात्कार लेना है कि सुनें यह क्या बात है यह किस कारण से है? यह भी अल्लाह जानता है। तो इस ओर भी ध्यान पैदा हो रहा है। मेरे दौरे के दौरान भी वहां लाखों लोगों तक संदेश पहुंचा। तो बहरहाल इश्तेहार के माध्यम से या समाचार के माध्यम से या प्रैस के माध्यम से बहुत व्यापक संदेश पहुंचता है जो साधारण साहित्य के माध्यम से नहीं पहुंचा सकता।

हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि अगर इश्तेहार पहले साल में बारह बार प्रकाशित होते थे तो अब चाहे साल में तीन बार कर दिया जाए और पृष्ठ दो चार ले आऐं लेकिन वह लाख लाख दो-दो लाख की संख्या में प्रकाशित हों तो पता लग जाएगा कि उन्होंने कैसे हलचल पैदा की है।"

(अल्फज़ल 2 नवम्बर 1922 ई जिल्द10 नम्बर 35 पृष्ठ 5)

और अब हम देखते भी हैं कि लाखों की संख्या में प्रकाशित होते हैं तो हलचल पैदा होती है। इसलिए कुछ लोग कई बार कह देते हैं कि अख़बारों में इश्तेहार देने का क्या लाभ। इश्तेहार देने का लाभ होता है क्योंकि इन अख़बारों के परिसंचरण से जमाअत का परिचय लोगों में पहुंचता है जबकि साहित्य आप बड़ी मुश्किल से दो महीने में जितना बांटते हैं कई बार एक अख़बार से एक दिन में उससे अधिक लोगों तक वह ख़बर पहुंच जाती है। आजकल अल्लाह तआला की कृपा से अख़बारों के द्वारा जमाअत का परिचय होता है जैसा कि मैंने कहा बहुत जगह पर हो रहा है। जमाअत का प्रेस और मीडिया विभाग जो है यह भी अल्लाह तआला की कृपा से इसमें बड़ी भूमिका निभा रहा है और यह व्यापक रूप से दुनिया में हर जगह हो रहा है। इसलिए प्रचार विभाग का भी काम है कि इस परिचय से फिर भरपूर लाभ उठाए और इस्लाम के वास्तविक संदेश को इस माध्यम से फिर आगे पहुंचाते रहें। यह न हो कि एक बार अख़बार में आ जाए और समाप्त हो जाए बल्कि आगे फिर प्रचार विभाग का काम है कि इस माध्यम को प्रचार के लिए भी उपयोग करें। इस परिचय को प्रचार के लिए भी उपयोग करें और इसके लिए नए नए रास्ते ढूँढें।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो ने एक बार बच्चों को प्रशिक्षित करने के लिए एक लेख लिखा। जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक कहानी का उल्लेख किया। आप लिखते हैं कि जनाब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 5 सितम्बर 1898 ई असर की नमाज़ के बाद मेरे आग्रह पर मुझे निम्नलिखित कहानी सुनाई जिससे मालूम होता है कि अल्लाह तआला पर भरोसा और विश्वास करना और सच्चा तक्वा व्यक्ति को इस योग्य बनाता है कि ख़ुदा तआला स्वयं इसके लिए काफी हो जाता है और ऐसे रूप में उसकी जरूरतों को पूरा करता है कि किसी को ख़बर भी नहीं होती। अत: हज़रत (अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने) फरमाया कि एक बुज़ुर्ग कहीं सफर पर जा रहे थे और एक जंगल से उनका गुज़र हुआ जहां एक चोर रहता था और जो हर आने जाने वाले मुसाफिरों को लूट लिया करता था। अपनी आदत के अनुसार इस बुज़ुर्ग को लूटने लगा। बुज़ुर्ग ने उसे कहा कि وَفِي السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ (अज़्ज़ारियात: 23) (अर्थात आसमान पर तुम्हारी रोज़ी मौजूद है जिस का तुम वादा दिए जाते हो बशर्ते नेकियों पर बने रहो।) फरमाया कि "तुम्हारी रोज़ी आसमान पर मौजूद है। तुम ख़ुदा पर भरोसा करो और तक्वा धारण करो। चोरी छोड़ दो। ख़ुदा तआला ख़ुद तुम्हारी ज़रूरतों को पूरा कर देगा। चोर के दिल पर असर हुआ। उसने बुज़ुर्ग को छोड़ दिया और उनकी बात पर अनुकरण किया। (आगे कहानी का किस्सा यह है कि) यहां तक कि सोने चांदी के बर्तन में इसे उत्कृष्ट उत्कृष्ट प्रकार का भोजन मिलने लगे। (कहाँ तो वह चोरियां करता था जहां चोरी छोड़ कर अल्लाह तआला पर भरोसा किया तो कहानी यह है कि सोने चांदी के बर्तन में उसे खाना मिलने लगा।) वे भोजन खाकर बर्तन को अपनी झोपड़ी के बाहर फेंक देता था। संयोग से फिर वही बुज़ुर्ग कभी उधर से गुज़रे तो उस चोर ने जो अब बड़ा नेक किस्मत और मुत्तकी हो गया था। इस बुज़ुर्ग को सारी स्थिति बयान की और कहा कि मुझे कोई और आयत बतलाए। तो बुज़ुर्ग ने कहा कि فَوَرَبِّ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ (अज़्ज़ारियात: 24) अर्थात् आसमान और ज़मीन के रब्ब की कसम निश्चित रूप से यह सच है। यह पवित्र शब्द सुन कर उस पर ऐसा असर हुआ कि ख़ुदा तआला की महिमा का विचार कर के तड़प उठा और उसी में जान दे दी।"

तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आठ दस साल के एक बच्चे को कहानी सुनाई और फिर वह आगे लेख में बच्चों को ही यह कह रहे हैं कि "तक्वा धारण करने से कैसे धन प्राप्त होता है कि वह ख़ुदा तआला जो पृथ्वी और आकाश के रहने वालों की परवरिश करता है क्या इस में कोई शक है। वह पवित्र और सच्चा ख़ुदा है जो हम सभी को पालता है पोसता है। अत: उसी ख़ुदा से डरो। उस पर भरोसा करो और नेक किस्मत धारण करो।

(अल्हकम 6-13 सितम्बर 1898 ई जिल्द 2 नम्बर 26-27 पृष्ठ 11)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में बच्चों की यह हालत थी कि उन्हें यह सबक दिए जाते थे जो आजकल के वयस्कों के लिए समझने में मुश्किल हैं। इसलिए हमेशा हम में से हर एक को याद रखना चाहिए कि तक़वा पर चलने की कोशिश करें और अल्लाह की ज़ात पर इतना विश्वास हो और उस पर कायम हों कि वही है जो हमारी परवरिश करने वाला है वही है जो हमें पालता है और इसमें कोई शक नहीं वही पवित्र और सच्चा ख़ुदा है और उसी से हमें डरना चाहिए और उसी से हर समय हमें मांगना चाहिए और उसी के आगे हमें झुकना चाहिए और उसी पर हमें हमेशा भरोसा करना चाहिए और यही नेकी है जो एक मुस्लिम के लिए अपनाना आवश्यक है और जिस पर ईमान लाना चाहिए और जिस पर अनुकरण करना चाहिए।

तो बड़ों के लिए भी इस शिक्षा की बच्चों से अधिक महत्त्व है। आजकल के दौर में जब हम इन बातों को भूलते जा रहे हैं और डर से कई बार कुछ लोग दूर हट जाते हैं और अल्लाह पे भरोसे के स्थान पर लोगों पर अधिक भरोसा हो जाता है उन्हें याद रखना चाहिए कि वास्तविक भरोसा ख़ुदा तआला की हस्ती पर होना चाहिए। इसलिए अल्लाह तआला करे कि हम सभी में यह तक्वा पैदा हो।

नमाज़ के बाद दो नमाज़ जनाज़ा ग़ायब पढ़ाऊंगा। एक जनाज़ा आदरणीय अल्हाज डॉक्टर इदरीस बंगोरा साहिब उप अमीर अव्वल सियरा लियोन का है जो 3 मई 2016 ई को संक्षिप्त बीमारी के बाद वफात पा गए थे। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। आप ने बो (Bo) शहर के स्कूल में पढ़ते समय अहमदियत स्वीकार की। 1966 ई में कार्यकारिणी के सदस्य बने और वफात तक किसी न किसी पद पर जमाअत की सेवा की तौफ़ीक़ पाई। लंबा समय बतौर डिप्टी अमीर अव्वल सेवाऐं करते रहे थे। सफल मुबल्लिग़ थे। कई लोगों को आप के माध्यम से अहमदियत स्वीकार करने की तौफीक़ मिली। मस्जिद से घर दूर होने के बावजूद सुबह और मग़रिब व इशा की नमाज़ मस्जिद में आकर अदा करते थे। छुट्टी वाले दिन सुबह से अस्र तक समय मस्जिद में बिताते और कुरआन शरीफ की तिलावत और नफलों में समय व्यतीत करते। जुम्अ: की नमाज़ की पाबन्दी और एम.टी.ए और ख़लीफा का ख़ुत्बा बड़ा नियमित सुनते। हर समय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कोई न कोई किताब अध्ययन करते। मदद के इच्छुक हर व्यक्ति की मदद करते हैं। पेशे के मामले में डाक्टर थे लेकिन इसके बावजूद जमाअत के लिए हर समय ज़िन्दगी वह एक रूप से समर्पित ही हुई थी। अक़ील अहमद साहिब क्षेत्रीय मिशनरी बो ने लिखा है कि किसी भी समय जमाअत के दोस्त सहायता का अनुरोध लेकर आते और बजट

में क्षमता दिखाई न देती तो आप अर्थात मिशनरी ऐसे लोगों को डॉक्टर साहिब के पास ले जाते और कभी भी ऐसा नहीं हुआ कि कोई आपके पास मदद के लिए आया हो और उसकी मदद न की हो। मरहूम अत्यधिक दयालु व मेहरबान इंसान थे। वाक़फीन ज़िन्दगी का काफी ध्यान से इलाज करते थे। जो दवाएं उपलब्ध होती अपने पास से दे देते और उन्हें दुआ के लिए कहते। ग़रीबों का मुफ्त इलाज करते बल्कि आने जाने का खर्च भी ख़ुद अदा करते थे। कई रोगियों के हरनिया के आपरेशन मुफ्त किए। जब सेहत ठीक न रही और कोई मरीज़ आ जाता तो उसे अस्पताल भेजते और फीस ख़ुद अदा करते थे। आपके द्वारा एक ईमानदार अहमदी डॉक्टर अल्हाज शिख़ूना टामो साहिब ने बैअत की और जमाअत को ज़मीन का टुकड़ा उपहार स्वरूप भेंट किया। जब डॉक्टर बंगोरह साहिब को पता चला कि यह बाद में आकर कुरबानी में आगे बढ़ गए हैं शहर के बीच में मस्जिद के लिए एक जगह जमाअत को दी। इसी तरह मस्जिद के निर्माण के लिए पैंतीस लाख लियोन की भारी- भरकम रकम भी दी। मरहूम अहमदियत के प्रेमी और अहमदियत के ख़लीफ़ा के लिए बहुत ईमानदारी से दुआएं करने वाले बुज़ुर्ग व्यक्ति थे। मरहूम मूसी थे और अन्य तहरीकों में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते थे। ये वे लोग हैं जो दूर दराज़ देशों में रहते हैं लेकिन अल्लाह तआला की कृपा से जब ईमान लाए तो इसमें तरक्की करते चले गए। अल्लाह तआला मरहूम के स्तर ऊंचा करे और उनकी नस्लों में भी अहमदियत को कायम रखे और हमेशा वफ़ा का संबंध रखे।

दूसरा जनाज़ा है आदरणीया मंसूरा बेगम साहिबा पत्नी ख़ालिद सैफुल्लाह खान उप अमीर आस्ट्रेलिया का है जो 21 जुलाई 2016 ई को आस्ट्रेलिया में वफात पा गईं। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। आप नमाज़ों की पाबन्द, तहज्जुद पढ़ने वाली, अहमदियत के लिए सम्मान रखने वाली, ख़िलाफत से बेहद प्यार का संबंध रखने वाली, नेक बुज़ुर्ग महिला थीं। अस्पताल में भी नमाज़ की फिक्र रहती थी और अंतिम बीमारी के कारण से नमाज़ भूल जाती थीं तो अपने पति को कहा कि मेरे साथ दोहरा दिया करें। (और इस तरह नमाज़) पढ़ लिया करती थीं। आप को सदर लजना इमाउल्लाह ऑस्ट्रेलिया, सदर लजना इमाउल्लाह लीबिया के रूप में, इसी तरह पाकिस्तान में तरबीला और सिविल लाइन क्षेत्र लाहौर में सेवा की तौफीक़ मिली। अपनी टीम बना कर काम किया करती थीं। कुरआन से प्यार था। नियमित तिलावत किया करती थीं। अपने बच्चों के अलावा ग़ैर अहमदी बच्चों को कुरआन पढ़ाने की तौफीक़ मिली। मरहूमा मोसिया थीं। बड़ी फिक्र से अपना चंदा अदा किया करती थीं। हिस्सा संपत्ति और हिस्सा आय जुलाई 2016 ई तक अदा किया था। पीछे रहने वालों में पति के अलावा दो बेटे और तीन बेटियां यादगार छोड़ी हैं। सभी अलग अलग रंग में धर्म की सेवा में व्यस्त हैं। उनके एक बेटे उम्र ख़ालिद साहिब यहां रहते हैं और लंदन के एक क्षेत्र के सदर जमाअत भी हैं। एक बेटे उन के राष्ट्रीय सचिव वक्फे नौ आस्ट्रेलिया हैं। अल्लाह तआला मरहूमा के स्तर ऊंचा करे और क्षमा और दया का व्यवहार करे उनकी नस्लों में भी हमेशा ईमानदारी और वफा बनी रहे।

☆ ☆ ☆

दो नफलों की तहरीक

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस ने अपने ख़ुत्बा जुम्अ: 3 दिसम्बर 2010 ई. में अहबाब को प्रतिदिन कम से कम दो नफ़ल नमाज़ पढ़ने की तहरीक करते हुए फ़र्माया :-

"अत: इस अवस्था में मैं सारी दुनिया की जमाअतों को विशेष रूप से अपने पीड़ित कष्ट एवं मुश्किलों में फंसे भाईयों के लिए दुआओं की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूँ। कम से कम दो नफ़िल प्रतिदिन केवल इन लोगों के लिए हर अहमदी पढ़े जो अहमदियत के कारण से किसी भी प्रकार के कष्ट से पीड़ित हैं। जो अत्याचारी कानूनों के कारण अपने नागरिक एवं धार्मिक स्वतन्त्रता के अधिकार से वंचित कर दिए गए हैं। इसी प्रकार जमाअती उन्नति के लिए भी विशेष रूप से दुआएँ करें। अत: यदि प्रत्येक अहमदी अपने दिल की बेचैनी को ख़ुदा तआला के समक्ष पहले से बढ़कर प्रस्तुत करेगा तो स्वयं देखेगा कि अल्लाह तआला के प्यार की नज़र उस पर किस प्रकार पड़ रही है। पहले से बढ़ कर अल्लाह तआला उन को अपनी सुरक्षा में ले लेगा।"

(रोज़नामा अलफ़ज़ल रब्वा, 4 जनवरी 2011 ई.)

चंदा तहरीक जदीद की शत प्रतिशत अदायगी

जैसा के दोस्तों को पता है कि तहरीक जदीद के वादा का नया साल एक नवम्बर से शुरू होकर 31 अक्तूबर को समाप्त हो रहा है। इस दृष्टि से यह साल समाप्त होने में लगभग अढ़ाई महीने ही शेष रह गए हैं। जबकि इस साल के वादों के मुकाबला पर वसूली की गति बहुत धीमी है। जो हम सभी के लिए चिन्ता जनक है। इसलिए वकालत माल तहरीक जदीद वादा करने वालों से सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ियल्लाहो अन्हो के निम्नलिखित मुबारक शब्दों में दर्द भरी अपील करती है कि:

"कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है कि वे वादे, जो ख़ुदा तआला से किए जाते हैं, वो मसऊल हैं। अर्थात उन के बारे में पूछा जाएगा। वह आदमी जिसने वादा नहीं किया, वह कमज़ोर है ख़ुदा तआला उसे तिरस्कार की निगाह से देखेगा। लेकिन जिसने वादा किया है और उसे पूरा नहीं किया वह दोषी है और ख़ुदा तआला उसे सज़ा देगा। तो यह वादा मामूली बात नहीं। अव्वल तो यही बात खेद वाली है कि इतना भव्य काम और इतनी मामूली कुर्बानी। फिर इससे अधिक दुर्भाग्य पूर्ण यह है कि वादों के पूरा करने की ओर बहुत कम ध्यान है।"

(तहरीक जदीद एक इलाही तहरीक, भाग 3, पृष्ठ 150)

इसी प्रकार फरमाते हैं कि "अगर आप ने अहमदियत को सच्चाई से स्वीकार किया है तो हे मर्दो ! और स्त्रियो ! तुम्हारा कर्तव्य है कि तहरीक जदीद के उद्देश्यों में मेरे साथ सहयोग करो। ज़मीन और आसमान का ख़ुदा गवाह है कि जो कुछ मैं कह रहा हूँ अपने ख़ुद के लिए नहीं कह रहा। ख़ुदा तआला और इस्लाम के लिए कह रहा हूँ। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए कह रहा हूँ। तुम आगे बढ़ो और अपना तन, अपना मन और अपना धन ख़ुदा और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए कुर्बान कर दो।"

(पुस्तक पांच हज़ारी मुजाहेदीन, पृष्ठ 8)

समस्त ज़िला तथा स्थानीय अधिकारियों,सदर साहिबों ज़िला व स्थानीय सेकट्रीयान तहरीक जदीद से अनुरोध है कि वे अपनी अपनी जमाअत के सारे श्रद्धालुओं से उनके वादों की शत प्रतिशत वसूली के सिलसिले में अभी से ज़ोरदार कोशिशें आरम्भ कर दें ताकि जमाअत अहमदिया भारत अपनी शानदार रिवायतों को कायम रखते हुए ख़लीफा की ओर से मिलने वाले इस साल के लक्ष्य को भी पूरा करके प्यारे आक़ा की दुआओं से पर्याप्त हिस्सा पाने का सौभाग्य हासिल कर सके।

अल्लाह तआला आपकी कोशिशों को सफल करे और जमाअत के सारे श्रद्धालुओं को अपने फज़लों, रहमों और बरकतों का वारिस बनाए। आमीन

(वकीलुल माल तहरीक जदीद कादियान)

☆ ☆ ☆

122 वां जलसा सालाना कादियान
(जलसा सालाना कादियान के आरम्भ पर 125 वां साल)

सय्यदना हज़रत अमीरूल मोमिनीन अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने 122 वें जलसा सालना कादियान के लिए दिनांक 26.27.और 28 (सोमवार, मंगलवार बुधवार) दिसम्बर 2016 ई की मंज़ूरी प्रदान की है। जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसा में शामिल होने के लिए तैयारी शुरु कर दें। अल्लाह तआला हम सब को इस इलाही जलसा से लाभांवित होने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। इस जलसा के प्रत्येक दृष्टि से सफल होने के लिए और नेक रूहूं के लिए हिदायत का कारण बनने के लिए दुआँए जारी रखें। जज़ाकुमुल्लाह अहसनल जज़ा।

(नाज़िर इस्लाह व इर्शाद मर्कज़िया, कादियान)

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIND 01885 Vol. 1 Thursday 25 August 2016 Issue No. 25

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

पृष्ठ 2 का शेष

वे कहते हैं कि हम मुसलमान नहीं हैं क्योंकि हमारी यह आस्था है कि जमाअत अहमदिया के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब अल्लाह के नबी हैं। हम कहते हैं कि हमारी आस्था है कि हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ख़ुदा तआला के नबी हैं और आप अलैहिस्सलाम को नबी का यह ख़िताब आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुद दिया है। और आप आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे अनुकरण और ग़ुलामी में नबी के स्थान पर विराजमान हैं।

*** पत्रकार मैंने कहा कि मुसलमानों का मूल सिद्धांत तो यही है कि एक ख़ुदा है और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस के अंतिम नबी हैं।**

इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया: आप यह न कहें कि मुहम्मद ख़ुदा तआला के अंतिम नबी हैं आप यह कहें कि ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह कि ख़ुदा एक है और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुदा के रसूल हैं। इस शब्द में यह उल्लेख ही नहीं कि वह अंतिम नबी हैं।

बाकी जहां तक अंतिम की बात है कुरआन आप को ख़ातमन्नबिय्यीन कहता है और हम इस के दूसरों से अलग यह अर्थ करते हैं कि इसका अर्थ है कि नबियों की मुहर हैं। हम इसे मुहर के अर्थ में लेते हैं। अर्थात आपकी मुहर के बिना अब कोई नया नबी नहीं आ सकता। हाँ आप की मुहर के साथ आ सकता है। कुरआन शरीयत की अंतिम किताब है कोई नई शरीयत अब नहीं है। और शरीयत लाने वाले अंतिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही हैं।

दूसरे लोग ख़ातमन्नबिय्यीन के यह अर्थ करते हैं कि आपने मुहर लगा कर नबी का टाइटल ही बन्द कर दिया है। अर्थात अब नबी के आने का दरवाज़ा बंद है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया किसी व्यक्ति का यह अधिकार नहीं कि वह इन आयतों की ऐसी व्याख्या करे जो ख़ुदा तआला के गुण को सीमित कर दे और अपने अधिकार को रोक दे।

*** पत्रकार ने सवाल किया कि जब दूसरे मुसलमान आप को मुसलमान नहीं समझते तो आप कैसा महसूस करते हैं जब कि आप के पास मस्जिद भी है और आप एक ही कुरआन की तिलावत करते हैं और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाते हैं। इन सब बातों के बावजूद आप को दूसरे मुसलमान नहीं समझते?**

इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया: आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भविष्यवाणी की थी कि जिस तरह यहूदियों ने ईसा को स्वीकार नहीं किया था बावजूद इसके कि तौरात में आपके आने के बारह में सारी भविष्यवाणियां मौजूद थीं। इसी तरह इस अंतिम समय में आने वाले नबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के रास्ते में भी मुसलमानों की ओर से रोकें डाली जाएंगी और बावजूद निशान पूरे होने के विरोधी स्वीकार नहीं करेगें।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: बावजूद इन सब रोकों के हम इस्लाम की सच्ची और वास्तविक शिक्षा फैला रहे हैं जिसके नतीजे में हर साल लाखों लोग हमारे साथ शामिल हो रहे हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: अब आप देखें कि 1889 ई में एक व्यक्ति ने कादियान जैसे एक छोटे से गांव में मसीह और महदी होने का दावा किया और घोषणा की कि वह मौऊद मसीह और महदी हूँ जिसके आने की भविष्यवाणी की गई थी। और यह घोषणा करने के समय वह अकेला था। फिर लोग उसके साथ मिलने शुरू हो गए और जब 1908 ई में उसकी मृत्यु हुई तो इस समुदाय की संख्या 4 लाख तक पहुंच चुकी थी। और यह स्वीकार करने वालों की एक बड़ी संख्या भारत और वर्तमान पाकिस्तान में से थी। फिर उसके बाद अरब देशों में भी लोगों ने आपको स्वीकार किया और आपकी जमाअत में शामिल हुए। इसी तरह दूसरे देशों से, इंडोनेशिया से हज़ारों लोग इस समुदाय में शामिल हुए। मलेशिया में बड़ी संख्या शामिल हुई। अरब दुनिया से भी लोग धीरे धीरे शामिल हो रहे हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया अगर सब शामिल होने वालों को पता था कि हम इस्लाम की सही शिक्षाऐं नहीं फैला रहे, आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उनका सही स्थान नहीं दे रहे और हम ख़ातमन्नबिय्यीन के ग़लत अर्थ कर रहे हैं और कुरआन की आयतों की सही व्याख्या नहीं कर रहे तो मुसलमानों में से यह हज़ारों की संख्या में हमारे साथ क्यों शामिल हो रहे हैं। तो इस तरह हमारी जमाअत की संख्या लगातार बढ़ रही है। जातियां इसी तरह उन्नति करती हैं। और हमारा मानना है कि इंशा अल्लाह एक दिन हम सफल होंगे। हम विजयी होंगे। अब बताएँ कि यहूदियों ने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया था। 300 साल लगे थे उसके बाद जाकर ईसइयत फैली थी।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: जमाअत अहमदिया के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद मसीह और महदी अलैहिस्सलाम ने यह भविष्यवाणी फरमाई थी कि तीन सौ साल का समय नहीं गुज़रेगा कि दुनिया में एक बड़ी संख्या मेरी जमाअत में शामिल हो चुकी होगी।

इस पर पत्रकार ने निवेदन किया कि आप बड़े मजबूत और शक्तिशाली हैं और अभी दो सौ साल का समय बाकी है।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया: एक सौ पच्चीस साल बीत चुके हैं और हम इस समय मिलयनज़ में हैं। एक आदमी ने पंजाब भारत के एक छोटे से गांव कादियान में दावा किया था और वह उस समय अकेला था और अब मिलयनज़ में है क्या ख़ुदा तआला का काम नहीं। यह सब कैसे हो गया।

*** पत्रकार ने सवाल किया कि हुज़ूर यहाँ डेनमार्क आए हैं और आप का समुदाय यहाँ मस्जिद के निर्माण पर पचास साल पूरे होने पर कुछ कार्यक्रम कर रहा है।**

इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया: मस्जिद के पचास वर्ष पूरे होने के संदर्भ में मेरा यहाँ आने का प्लान नहीं था। हालांकि मुझे पता था कि मस्जिद के निर्माण पर पचास साल पूरे हो गए हैं लेकिन मेरे यहाँ आने का यह कारण नहीं है।

***पत्रकार ने कहा कि कल HILTON होटल में जो RECEPTION समारोह हुआ है उस में मंत्री, संसद के सदस्यों, एम्बसडर, रशिया और अमेरिका के प्रथम सैकर्टरीज़ कुछ अन्य लोग आए थे। 150 के लगभग मेहमान थे लेकिन इन मेहमानों में मेरे अतिरिक्त कोई अन्य पाकिस्तानी लोग नहीं थे। ऐसा क्यों था।**

इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फरमाया: यहाँ की स्थानीय प्रशासन इसका बेहतर जवाब दे सकती है। हम ने पाकिस्तानी एम्बसडर को बुलाया था और साथ एम्बेसी के लोगों को बुलाया था। एम्बसडर के विषय में पता चला कि वह उमरा के लिए जा रहे हैं और दूसरों के बारह में ज्ञात नहीं है कि वह किस कारण से नहीं आ सके।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया यह हमारा सामान्य तरीका है कि जब हम हर साल लंदन में सिम्पोज़ियम करते हैं तो इसमें बहुत सारे पाकिस्तानी समुदाय के मेहमान शामिल होते हैं और इंडियन ORIGIN के लोग आते हैं। अब यहाँ पता नहीं कि पाकिस्तानियों के साथ कैसे संबंध हैं या तो संबंध इतने अच्छे नहीं या वे हमारे कार्यक्रम में आना नहीं चाहते लेकिन मुझे इस विषय में पता नहीं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: हम इस्लाम का सच्चा संदेश यहां के लोकल डेनिश लोगों में पहुंचाना चाहते थे। मेरा मानना है इसलिए शायद उन्होंने लोकल डेनिश लोगों को अधिक आंमत्रित किया है। यहां तक कि हमारे अपने समुदाय के सदस्य भी बहुत कम थे। शायद दस पंद्रह की संख्या में मौजूद थे।

(शेष.....)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad